Economics D.A Hons

Dr. Vinod Baitha
Deptt of Economics
Marwari college
Darbhanga.

उपभोग फलन
CONSUMPTION FUNCTION

कीन्स के रोजगार सिद्धान्त में स्पष्ट किया गया है कि किसी भी समाज में रोजगार और आय का स्तर प्रभावपूर्ण मांग Effective Demand की मात्रा पर निर्भर होते हैं, और प्रभावपूर्ण मांग कुल मांग फलन द्वारा निर्धारित होती है। किसी भी द्विक्षेत्रिय अर्थव्यवस्था के मॉडल में कुल मांग दो अंग होते हैं। (i) उपभोग और (ii) विनियोग, इन्हीं दोनों अंगों की व्याख्या की गयी है।

उपभोग का अर्थ राष्ट्रीय आय का वह भाग जिसे वस्तुओं और सेवाओं पर व्यय किया जाता है उसे कुल उपभोग व्यय अथवा उपभोग कहते हैं और जिसका उपभोग नहीं किया जाता है उसे बचत कहते हैं। उपभोग (C) एवं बचत (S) के जोड़ को आय कहते हैं। अतः आय = उपभोग + बचत $Y = C + S$ उपभोग राष्ट्रीय आय का वह भाग है जिसे वस्तुओं और सेवाओं पर व्यय किया जाता है।

उपभोग व्यय कई तत्वों जैसे आय वस्तु की कीमत, फैशन आदि पर निर्भर करता है अतएव यह कहा जा सकता है कि उपभोग कई तत्वों का फलन है अर्थात कई तत्वों पर निर्भर है परन्तु उपभोग पर सबसे अधिक प्रभाव आय का पड़ता है। इसलिए कीन्स का यह मत था कि किसी अर्थव्यवस्था का कुल उपभोग व्यय मुख्य रूप से आय पर निर्भर करता है। अथवा कहा जा सकता है कि उपभोग आय का फलन है। $C = f(Y)$

इस प्रकार से कई अर्थशास्त्रियों द्वारा उपभोग फलन की परिभाषा दी गयी है जो निम्नलिखित है।

1. अर्थशास्त्री ब्रुडमैन Brudman के अनुसार "उपभोग फलन यह बताता है कि उपभोक्ता आय के प्रत्येक सम्भव स्तर पर उपभोग पदार्थों पर कितना खर्च करना चाहेंगे"।
2. अर्थशास्त्री पीटरसन के अनुसार "उपभोग फलन की परिभाषा एक अनुसूची के रूप में दी जा सकती है जो कि विभिन्न स्तरों पर उपभोग पदार्थों और सेवाओं पर दीए गए व्यय की मात्रा को बताती है"

उपभोग फलन की उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर उपभोग फलन के महत्व को निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत रखा जा सकता है। जो निम्न हैं

1. 'से' के बाजार नियम का खण्डन — 'से' के अनुसार "पूर्ति अपनी मांग स्वयं सृजित कर लेती है"। इसलिए अर्थव्यवस्था में अतिउत्पादन अथवा बेरोजगारी का प्रश्न ही नहीं उठता। कीन्स का उपभोग फलन इस धारणा का खण्डन करता है। कीन्स का यह कहना है कि चूँकि सीमान्त उपभोग की प्रवृति सदैव इकाई से कम होती है अर्थात उपभोग में होनेवाली वृद्धि, आय में वृद्धि की तुलना में कम है। इसलिए आय और उपभोग के बराबर न रहने के कारण अति उत्पादन अथवा बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

2. उपभोग फलन पूँजी की घटती हुई सीमान्त क्षमता की व्याख्या करता है। — पूँजी की सीमान्त कुशलता पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में गिरती हुई क्यों होती है। इस बात का उत्तर भी उपभोग फलन से प्राप्त हो जाता है। MPL के इकाई से कम होने पर अल्प काल में लगभग स्थिर रहने के कारण वस्तुओं की मांग घटती है जिससे वस्तुओं के मूल्य में कमी आती है और उत्पादकों को लाभ कम हो जाता है लाभ कम होने के कारण पूँजीगत वस्तुओं की मांग कम हो जाती है। और परिणाम स्वरूप पूँजी पर लाभ की प्रत्याशित दर (अथवा पूँजी की सीमान्त क्षमता) कम हो जाती है।

3. व्यापार चक्रों का आधार — उपभोग फलन इतना महत्वपूर्ण होता है कि कट अर्थ...

Scanned by CamScanner

ने इसे व्यापार-चक्रों का वास्तविक आधार स्वीकार किया है। इसी मत के अनुसार समाज में प्रभाव पूर्ण माँग विनियोग की मात्रा एवं रोजगार की मात्रा आदि तत्व जो व्यापार चक्रों का निर्माण करते हैं का आधार सामाजिक उपभोग ही होता है।

5. अति बचत की धारणा में सहायक — उपभोग फलन के विचार ही अति बचत अथवा बचत अंतर की धारणा को स्पष्ट करता है।

6. गुणक के कार्य-करण को समझाने में सहायक — गुणक निवेश वृद्धि एवं आय वृद्धि के बीच अनुपात को प्रकट करता है। निवेश वृद्धि के परिणाम स्वरूप आय में जितने गुणा वृद्धि होती है, उसे विनियोग गुणक (K) कहा जाता है। गुणक का कार्य करण MPC पर निर्भर करता है। MPC जितनी अधिक होती है गुणक का मान भी उतना ही अधिक होता है।

7. विनियोग निर्धारण में सहायक — उपभोग फलन का विचार रोजगार तथा आय के निर्धारण में विनियोग की महत्वपूर्ण भूमिका को स्पष्ट करता है। उपभोग फलन यह बताता है कि उपभोग में होने वाले वृद्धि आय वृद्धि की तुलना में कम हो जाती है। अत: आय एवं व्यय में एक प्रकार का अंतराल पैदा हो जाता है। अत: इस अंतर को पाटने के लिए विनियोग में वृद्धि की जानी चाहिए। बिना विनियोग में वृद्धि किये उत्पादन रोजगार तथा आय के स्तर को बनाए रखना संभव नहीं होगा।

8. सामान्य बेरोजगारी की सम्भावना — इस नियम के अनुसार कुल आय बढ़ने पर उपभोग व्यय इतना नहीं बढ़ता, जितनी आय में वृद्धि होती है। इसका अर्थ यह है कि कुछ वस्तुएँ ऐसी होती हैं जिनका कोई क्रेता नहीं होता। सीमान्त उपभोग प्रवृति का इकाई से कम होना भी स्पष्ट करता है कि जितना उत्पादन होता है, वह सब खरीद नहीं किया जाता फलत: अति उत्पादन और उसके परिणाम स्वरूप सामान्य बेरोजगारी की संभावना रहती है।

9. दीर्घकालीन गतिहीनता — कीन्स का उपभोग सिद्धान्त दीर्घकालीन स्थिर मंदी को स्पष्ट करता है। उपभोग प्रवृति के स्थिर होने के कारण विनियोग के अवसर सीमित होते हैं। और बचत बढ़ जाती है। फलत: एक विकसित अर्थव्यवस्था में एक ऐसा समय आ जाता है जब वह अर्थव्यवस्था अपनी अतिबचतों को विनियोग करने में असमर्थ हो जाती है। इस अवस्था को ही दीर्घकालीन गतिहीनता या मंदी कहते हैं।

10 विनियोग प्रोत्साहन — अर्द्धविकसित देशों में सीमान्त उपभोग प्रवृति अधिक होती है, इसलिए इन देशों में विनियोग के अवसर भी अधिक होते हैं। और इस कारण विनियोग को प्रोत्साहन मिलता है।

11 सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता — चूँकि सम्पूर्ण आय अपने आप में व्यय नहीं हो जाती अत: आय तथा व्यय के बीच एक अंतर सा पड़ जाता है यह अन्तर अपने आप बजारी दशाओं द्वारा भरा जाता है। अत: ऐसी परिस्थिति में प्रबंध या हस्तक्षेप की नीति बेकार हो जाती है। और इस तरह राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए अथवा व्यय को आय के बराबर करने के लिए सरकार को हस्तक्षेप करना ही पड़ेगा।

12 आर्थिक नीति के निर्माण में सहायक — कीन्स का यह सिद्धान्त पूर्ण रोजगार और आर्थिक स्थिरता के लिए आर्थिक नियम बनाने में काफी सहायक होता है। बेरोजगारी की स्थिति में सरकार को प्रभाव पूर्ण माँग में वृद्धि करने के लिए ऐसी नीति अपनानी चाहिए जिससे धनी वर्गों से आय निर्धन वर्गों की ओर अन्तरित हो सके। कारण यह है कि निर्धनों की सीमान्त उपभोग प्रवृति धनवानों की अपेक्षा अधिक होती है फलत: जब आय परिवर्तित होकर उसके पास आएगी तो उपभोग प्रवृति बढ़ेगी जिसके कारण प्रभावपूर्ण माँग और आय में वृद्धि होगी।

इस तरह उपर्युक्त अनेक महत्व के बावजूद भी कीन्स के उपभोग फलन की आलोचना अर्थशास्त्रियों द्वारा की जाती है जो निम्नलिखित है। P.T.O —

Scanned by CamScanner

① प्रवृति शब्द का अनुचित प्रयोग — कीन्स के उपभोग फलन में प्रवृत्ति शब्द के प्रयोग पर प्रो० हैजलिट ने आपत्ति उठाई है। वास्तव में प्रवृत्ति का अर्थ केवल झुकाव होता है। जबकि कीन्स ने प्रवृत्ति शब्द को आय का एक निश्चित भाग को व्यक्त करने के लिए उपयोग किया है। इसके साथ-साथ उपभोग प्रवृत्ति में से व्यय की जाने वाली राशि को प्रकट नहीं करती। जिसका यह भाग जो पूँजीगत पदार्थों पर व्यय किया जाता है। उपभोग में शामिल नहीं किया जा सकता हैजलिट के शब्दों में " यदि एक डाक्टर एक मकान खरीदता है और उसको अपने निवास स्थान और दफ्तर के रूप में प्रयोग करता है तो उस शब्द को केन्स के खाते में कितने भाग को डाक्टर की उपभोग प्रवृत्ति और कितने को निवेश में लिखा जाएगा। "

2. अवास्तविक — हैजलिट ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि तथ्यों के आधार पर यह सिद्धान्त गलत है। उसने अमेरिका में 1944-55 तक के उपभोग और आय और बचत के आकड़ों को स्पष्ट किया कि आय के बढ़ने पर बचत बढ़ने के बजाय कम हुई है।

3. दीर्घकालीन नहीं — इस नियम की आलोचना इस आधार पर भी की जाती है कि यह केवल अल्पकालीन नियम है। क्योंकि दीर्घकाल में मनोवैज्ञानिक और संस्थागत तथ्यों में परिवर्तन हो जाने के कारण उपभोग प्रवृत्ति में परिवर्तन हो जाता है।

4. अन्य आलोचनाएँ — (i) हैजलिट ने इस नियम को एक धोखा बताया है। उनके अनुसार इसे गणितीय समीकरण में व्यक्त करने पर उसमें निश्चितता नहीं आ सकती

(ii) कीन्स ने अल्पकालीन और दीर्घकालीन उपभोग प्रवृत्ति में अंतर स्पष्ट नहीं किया है।

(iii) प्रो० गार्डनर एक्ले के शब्दों में — कीन्स का उपभोग फलन आगमन तर्क का कोई महत्वपूर्ण उदाहरण नहीं है और न निगमन तर्क को विवेचित करता है।

(iv) प्रो० कीन्स ने उपभोग प्रवृत्ति सिद्धान्त का समाज पर क्या गुणात्मक प्रभाव पड़ता है इस तथ्य की विवेचना नहीं हुई। यह केवल संख्यात्मक दृष्टिकोण बतलाता है।

(v) प्रो० कीन्स का सिद्धान्त धन का आकार, आय व धन के मध्य संबंध व काले धन नामक तत्वों का कोई विवेचना नहीं करता है।

इस तरह उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद भी हम कह सकते हैं कि कीन्स की उपभोग फलन की धारणा का महत्व कम नहीं हुआ है। कीन्स के उपभोग फलन की धारणा आर्थिक विचारों में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। प्रो० डडले डिलार्ड ने उपभोग की प्रवृत्ति का महत्व बतलाते हुए लिखा है कि " उपभोग प्रवृत्ति की धारणा का बहुत अधिक व्यवहारिक महत्व है तथा यह आर्थिक विश्लेषण को बहुत अधिक सरल बना देता है। "

प्रो० हैनसन ने उपभोग की प्रवृत्ति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि " कीन्स का सबसे बड़ा योगदान उसका उपभोग फलन विचार है जिसने आर्थिक विश्लेषण के क्षेत्र में एक उपकरण के रूप में एक नये युग का सूत्रपात किया है। " प्रो० हैरिस ने तो कीन्स के उपभोग फलन को अद्वितीय खोज तक की संज्ञा दे डाली है

इस प्रकार कीन्स का उपभोग फलन सिद्धान्त का व्यवहारिक महत्व है। कीन्स ने अपने कार्यकाल में उपभोग फलन के सिद्धान्त द्वारा एक नयी जानकारी अर्थशास्त्रियों को दी है जिसे एक नए युग के सूत्रपात का संकेत है।

Scanned by CamScanner